॥ भक्त सञ्जीवनं ॥

भक्त सञ्जीवनं भस्म विभूषणं
भव भञ्जना जय भूत गणाधिप ॥

नर्तन लालस नवरज मृदुहास
कीर्तनप्रिय जय भूत गणाधिपा ॥

कलतल नवमणिगण कृत भूषण
कलपाञ्चित जय भूत गणाधिप ॥